Vol III Issue X July 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 10 | July. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

विभिन्न धर्मों में मानवीय एवं सामाजिक सह–संबंधों में हिन्दी साहित्य की भूमिका

मोहन सिंह

प्रवक्ता – हिन्दी , रा.इ.का. नारायण नगर सिनाई ,
जिला – चमोली गढवाल , उत्तराखण्ड.

सारांश :

धर्म जिसे सामान्यतः मजहब, मत, पंथ, आदि के सन्दर्भ में स्वीकार किया जाता है। धर्म की व्याख्या करते हुए 'मनुस्मृति' में कहा गया है कि धैर्य, क्षमा, दान, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय–विग्रह, तत्व ज्ञान, आत्मज्ञान, सत्य, अक्रोध धर्म के दस लक्षण है।

सच्चा धर्म हमें आश्रितों का सम्मान करना सिखाता है और मानवता, निर्धनता, मुसीबत, पीड़ा एवं मृत्यु को ईश्वरीय देन मानता है। हम देखते है कि धर्म की अवधारणा आलौकिक विश्वासों तथा अति–प्राकृतिक शक्तियों से सम्बद्ध है, जबकि धर्म भावना में किसी भी प्रकार की आलौकिक शक्ति के प्रति भावना की अपेक्षा आचार–संहिता पर जोर दिया जाता है। धर्म भावना के अर्न्तगत आत्मा, परमात्मा या अधि–प्राकृत की चर्चा नही की गई है। अपने वास्तविक अर्थ में भी 'धर्म' शब्द 'ब्रह्म' का पर्याय है। 'धारयते इति धर्मः' अर्थात जिसने समग्र ब्रह्मण्ड को धारण कर रखा है। अर्थात धारण करते हुए जो सर्वत्र व्याप्त है, वह धर्म है। और सबसे महत्वपूर्ण है। धर्म–भावना, यही धर्म–भावना विभिन्न संकीर्ण मानसिकताओं से ऊपर उठकर हमें मनुष्यता का पाठ पढ़ाती है। धर्म के अभाव में देवों को भी दुर्लभ यह मानव शरीर पशुवत हो जाता है।

प्रास्ताविक :

वास्तव में धर्म का संबंध मानव मात्र की भलाई या परोपकार से है। लेकिन मानव समाज के कुछ स्वार्थी लोगों ने धर्म के दायरे का संकीर्ण बनाकर अपने हितों को साधना प्रारम्भ कर दिया है। धर्म के ब्रह्म स्वरूप को आन्तरिक स्वरूप से अधिक महत्व देते हुए उसकी व्याख्या को संकीर्ण बना दिया और जब समाज की भोली मानसिकता को कलुषित करने का कार्य किया है। जिससे अपने पक्ष में उसका इस्तेमाल किया जा सके। यही से धार्मिक संकीर्णता प्रारम्भ होती है और समाज अनेक खण्ड़ों में विभाजित हो जाता है। धर्म के साथ अनेक रूढिया कुरीतियों एवं पाखण्ड़ी क्रियाकलापों कों सम्बन्धित करके समाज के अन्दर कई विभाजन कर दिए गए। मनुष्यता के लक्ष्य को भूलकर निहित स्वार्थी तत्वों ने अपने लाभ के लिए मानव के बीच भेदभाव के गहरे बीज बो दिए जबकि कोई भी धर्म कभी भी मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद करना नही सिखाता है। किसी भी धर्म का लक्ष्य मानव मात्र की सेवा करना, उसके उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करना एवं मानव–मानव को एक दुसरे के साथ जोड़कर रखना होता है। किसी भी धर्म का अन्तिम उद्देश्य मानवता के सन्देश का प्रसार करना होता है। सम्प्रदाय विशेष के नाम पर विचारों आदर्शो आदि की स्थापना करना समुदाय की संकीर्ण भावना का सूचक है।

भारतीय समाज विविधताओं में एकता वाला समाज है। यहाँ लगभग सभी क्षेत्रों में असंख्य विविधता देखने को मिलती है। धर्म सम्बन्धी विविधता भी उनमें से एक है। इन विविधताओं को अधिक महत्व न देने की सलाह भारतीय समाज के अनेक मनुष्यों एवं समाज सुधारकों ने समय–समय पर गम्भीरता के साथ दी है। उन्ही में से एक महान कवि सम्राट एवं समाज सुधारक कबीरदास जी थे। कबीर दास जी ने अपने कई दोहों में धर्म की कबीर संकीर्णता को त्यागकर मानवता की उदार भावना को आत्मसात् करने का सुझाव पूरी ईमानदारी एवं सहृदयता के साथ दिया।

"माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
कर का मन का छाड़ि के,मन का मन का फेर।।"

कबीर दास जी के साहित्य ने समाज में विभिन्न धर्मो में आपसी प्रेम भाव का संचार किया है। तथा सर्व धर्म समान की भावना का लोंगों में विकास किया है। कबीर दास जी के साहित्य में वह शक्ति थी जिसमें समाज में व्याप्त धार्मिक रूढियों को जड से समाप्त करने का पूर्ण प्रयास किया था। और समाज में समानता के साथ सद्भाव भाईचारे, सहयोग की भावना का विकास किया।

कबीर दास जी ने फटकाराने में न पाखण्ड़ी पण्ड़ितों को छोड़ा, न अन्धविश्वासाठी मौलवियों को कर्मकाण्ड के वे सख्त विरोधी थे। एक ओर सिर्फ दिखावा करने वाले नमाजियों का विरोध किया, तो दूसरी ओर माला फेरने वाले पाखण्ड़ी पण्डितों को भी खरी–खरी सुनाई वास्तव में कबीर न केवल महान कवि थे बल्कि गहन चिन्तक, ईश्वर के सच्चे भक्त, समाज–सुधारक एवं मानवता के उच्च सन्देशवाहक थे। कबीर ही नही बल्कि पूरे भक्तिकाव्य की एक ही चेतना थी मानवता के धर्म की प्रतिष्ठा।

आधुनिक समय में भी हमने अपने संविधान में सिर्फ मानव–मात्र को ही महत्व दिया। भारतीय संविधान में स्पष्ट कहा गया है कि धर्म, जाति या लिंग के अनुसार किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव नही किया जाएगा। लेकिन वास्तविकता यह है कि हमारी राजनीतिक गतिविधियों में साम्प्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता जैसी भावनाँए गहराई तक प्रवेश कर चुकी है।

हमारी राजनीतिक व्यवस्था उन संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों के दबाव से उबर नही पा रही है। हमारे नेताओं ने भारतीय उप संस्कृति के समन्वय द्वारा राष्ट्रीय संस्कृति का विकास नही किया। इसके अतिरिक्त धर्मनिरपेक्षता को सिर्फ राज्य तक सीमित कर देने के कारण अलग–अलग उपसंस्कृतियों एवं धार्मिक पहचानों का प्रबल हो जाना स्वाभाविक है। लेकिन राष्ट्रीय अखण्डता की रक्षा हेतु धर्मनिरपेक्षिता अनिवार्य शर्त है। राष्ट्रीयता की भावना किसी भी धर्म के विरूद्ध न होकर धार्मिक कट्टरता के विरूद्ध हो।

वास्तव में सच्चे धर्म का प्रचार्य राजनीति को मर्यादा के अर्न्तगत बांधना है। धर्म राजनीतिज्ञों को प्रजा के हितों की रक्षा करना ही शासक का कर्तव्य है। यह चेतना धर्म से ही आती है। धर्म के बिना राजनीति निर्दयी बन जाती है। जिस प्रकार धर्म सुख का मूल है। उसी प्रकार सहानुभूति धर्म का मूल है। इसलिए जब राजनीति को धर्म से दूर रखा जाता है। तब सहानुभूति की भावना समाप्त हो जाती है। आधुनिक युग में भारत जैसे देश में ख्याति चाहने वाले एवं चर्चित रहने वाले नेता धर्म की आड लेते है। जिन धार्मिक गुरूओं ने धर्म के माध्यम से लोगों को मानव मात्र से प्रेम, बन्धुत्व एव एकता की भावना रखने का पाठ पढ़ाया, आज उन्ही की आड लेकर धर्म भीरू जनसामान्य की भावनाओं से खेला जा रहा है। बाबरी मस्जिद एवं राम जन्म भूमि विवाद राजनीतिज्ञों की स्वार्थी नीति का ही परिणाम है।

हिन्दी साहित्य ने क्षेत्र, समाज, धर्म, राज्य सम्प्रदाय में बंटे हुए लोगों का एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। तथा समाज में मानवता की भावना को उदय किया है। साथ ही साहित्य की रचनाओं ने मानव ह्रदय में स्नेह एवं प्रेम की भावना का विकास किया है।

गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि "जिमि पाखण्ड़ विवादते, लफपत होय सदग्रन्थ" अर्थात पाखण्ड़ के फैल जाने पर सच्चे धर्म का लोप हो जाता है। हिन्दी साहित्य के माध्यम से आज देश के प्रत्येक नागरिक को धर्म के वास्तविक रूप का ज्ञान हुआ है। इसी वास्तविक ज्ञान से समाज से धार्मिक कलह समाप्त हुआ है। वास्तविकता प्राप्त होने के फलस्वरूप लोग स्वार्थी तत्वों के बहकावे में नही आए है। और समाज में मानव का मान सम्मान बढ़ा है। एवं लोगों में प्रेम एवं बन्धुत्व की भावना का विकास हुआ है। इकबाल की इन पंक्तियों 'मजहब नही सिखाता आपस में वैर रखना' में एक तरफ एकता का सन्देश है तो दूसरी तरफ मानवीयता का। एक और राष्ट्रीयता है, तो दूसरी ओर अर्न्तराष्ट्रीयता दोनों का मेल कराती ये पंक्तियाँ लिखे जाने के समय जितनी प्रासंगिक थी। उतनी ही प्रासंगिक वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी है। लोगों का धर्म की वास्तविक चेतना को समझना होगा और उसके अनुरूप मानव मात्र से प्रेम एवं आत्मीयता का संबंध स्थापित करना होगा। क्योंकि धर्म का मूल सार मानवीयता है, मानुष–प्रेम है, इसके अतिरिक्त और कुछ नही।

कबीरदास जी ने जनसाधारण को आडम्बरपूर्ण धर्म से निकाल कर सहजधर्म की ओर प्रवृत करने का संकल्प लिया। अपने इस संकल्प की मूर्ति के लिए उन्होंने बड़ी निर्ममता अक्खड़ता और दृढ़ता से सभी प्रचलित अन्धविश्वासों, पाखण्ड़ों और आडम्बरों को ध्वस्त किया। सन्ध्या, तपस्या, षडयन्त्र, तीर्थ–व्रत आदि धार्मिक औपचारिकताओं को खोखला सिद्ध किया। बड़े जोरदार तर्को से अन्धविश्वासों की निरर्थकता स्पष्टता की साम्प्रदायिक सीमाओं में बंधे हुए धर्मो को एक दूसरे से मिलने के लिए मुक्त किया और उनके परस्पर विरोधी तत्वों का निराकरण करके संघर्ष की संभावनाओं को नष्ट कर दिया। उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म को सहज–धर्म, मानव धर्म, जनधर्म कोई भी संज्ञा दी जा सकती है। कबीर का यह धर्म किसी भी धर्म विशेष का अनुकरण न होकर अनेक धर्मो के सहज तथा शाश्वत तत्वों का समन्वय है। इसमें वैष्णव का प्रेमादर्श, त्याग, विनय, के प्रति सूफियों की इश्क भावना, भारतीय अद्वैत–चिन्तन और योग चिन्तन आदि का समावेश है। यह सहजधर्म हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण, शूद्र सभी को मान्य हो सकता है।

कबीर दास जी ने धर्म के क्षेत्र में आत्मिक शुद्धता, ह्रदय की निष्कलुषता और आचरण की सात्विकता को अनिवार्य माना। मन को निर्विकार करने के लिए योगसाधना को भी धर्म–साधना में उचित स्थान दिया। वे योगसाधना के ऐसे स्वरूप को अपनाने की सलाह देते हैं। जिसमें काया–कलेश कम से कम हो बल्कि यों कहिए कि वह सहज योग हो।

यह सहज योग भाव योग का ही पूरक है। कबीर ने अनेक स्थलों पर सहज समाधि, सहज ज्ञान तथा सहज सुख का वर्णन किया है। कबीर द्वारा निरूपित 'सहज' की पहचान इतनी सरल नही है जितनी कहने से प्रतीत होती है।

कबीर सहज सहज सब कोइ कहै सहज न चीन्हैं कोइ।
जिन्ह सहजै विषिया तजी, सहज कहीजैं सोइ।।

वैसे पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा कबीर दास जी स्वानुभूतिजन्य ज्ञान को अधिक प्रमाणिक मानते है, कबीर के सहज धर्म का मूल आधार है, प्रेम और एकता प्रेम का भाव इतना विराट और व्यापक है कि प्रकृति के कण–कण में आत्माभाव दृष्टिगत होता है। इसमें शाश्वत सुख–शान्ति की परिकल्पना तो है किन्तु अन्ततः यह निष्काम है। इस धर्म का आचरण करने वाला आत्यन्तिक स्थिति में सुख–दुःख, निंदा–स्तुति, मान–अपमान, यश–अपयश, ऊँच–नीच आदि। द्वन्द्वों तथा विषमताओं से अलग समरस हो जाता है। यह विषय–वासनाओं को सहज ही में छोड़कर राममय हो जाता है। हिन्दी के यशस्वी रचनाकार गजनन माधव मुक्तिबोध के शब्दों में कह सकते है। कबीर और (नानक) मानव समानता के प्रचारक, शील और स्नेह के पुरस्कर्ता तो थे ही, उन्होंने मानव मात्र के लिए सामान्य धर्म की प्रतिष्ठा करनी चाही वह धर्म नही जो किताबों और ग्रन्थों में बंधा रहता है, जो रूढ़ियों और रिवाजों में फंस जाता है, मनुष्य–मनुष्य के बीच गर्व और दम्भ पाखण्ड़ तथा द्वेष की दीवारें खडी करके मानवता को अलग–अलग टुकड़ों में काटकर तितर–वितर कर देता है। वरन् उन्होंने उस धर्म को प्रतिष्ठित किया जो मानव मात्र के अन्तःकरण में मानव गुण के रूप में विराजमान है, जो ह्रदय का गुण और आत्मा का स्वभाव है। जिनके द्वारा मानवता अखण्ड हो जाती है, जनता एक हो जाती है।

भारतीय सामाजिक संगठन तथा धर्म एवं इस्लाम के मौलिक भेदों की चर्चा करते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि 'मुसल्मानी धर्म एक मजहब' है। भारतीय समाज में बिल्कुल उल्टे तौर पर उसका संगठन हुआ था। भारतीय समाज जातिगत विशेषता रखकर भी व्यक्तिगत धर्म साधना का प्रचारक था। एक का केन्द्र बिन्दु चारित्रय था, दूसरे का धर्ममत। भारतीय समाज में यह स्वीकृत तथ्य था कि विश्वास चाहे जो भी हो चारित्र्य शुद्ध है तो व्यक्ति श्रेष्ठ हो जाता है।

कबीरदास जी समन्वय की प्रखर चेतना के साथ इस गतिरोध को समाप्त करने का संकल्प लिया। उन्हौने भारतीयता को नये ढ़ंग से समझने पहचानने और स्थापित करने का यत्न किया। व्यापक जनसमूह के समक्ष के एक नये धर्म का प्रस्ताव लेकर आये।

संदर्भ संकेत :–

1.निबन्ध माला – योगेश चन्द्र जैन
अरिहन्त पब्लिकेशन (इण्ड़िया) लिमिटेड
पृष्ठ सं. – 402, 403, 404

2.कबीर ग्रन्थावली (सटीक)
लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद नई दिल्ली पटना
संपादक – रामकिशोर शर्मा
पृष्ठ सं. 58, 59, 60, 61, 62

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net